5 पहले अपना अध्ययन करो

पाठ-योजना

कविता का नाम	**पहले अपना अध्ययन करो**
कालांश संख्या	4 से 6
शिक्षण प्रक्रिया	Student Led
कविता का उद्देश्य	• देश और समाज के प्रति कर्तव्यों का भान कराना • आत्ममंथन की प्रेरणा देना • झूठी प्रशंसा करने वालों से सावधान रहना सिखाना • अहंकार का त्याग करने की सीख देना • कर्मठता का पाठ सिखाना • कविता का भावानुसार लययुक्त वाचन सिखाना • कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण और अर्थ सिखाना • वचन और कारक भेद का परिचय देकर अभ्यास करवाना • विविध गतिविधियों द्वारा सृजनात्मक क्षमता का विकास करना
कविता में आने वाले विषय	लिंग, वचन, कारक-भेद, चार्ट-निर्माण, कविता वाचन, अनौपचारिक पत्र, दोहा-कविता साम्य
शिक्षण सामग्री	पाठ्यपुस्तक, आई-बुक एनिमेशन, वेब सपोर्ट, टेस्ट जेनरेटर
मानक/अमानक शब्द	सिद्धि/सिद्धि, पर्यंक/पर्यङ्क
आरंभ— चर्चा एवं समूह वाचन, कौशल— पठन, वाचन-श्रवण	• कविता के शीर्षक और चित्र पर चर्चा करें—कविता के शीर्षक से इसकी विषयवस्तु के बारे में क्या पता चलता है? • चित्र में क्या दिखाया गया है? • इसका क्या अर्थ है? स्वयं का चिंतन-मनन करने से क्या लाभ है? आदि। • कविता का मूल भाव बताएँ। • Smart board पर कविता का एनिमेशन दिखाएँ और वाचन सुनवाएँ। • अब कक्षा को छोटे-छोटे समूहों में बाँटकर कविता का लययुक्त वाचन करवाएँ। • एक-एक काव्यांश का वाचन करवाकर उसका सरलार्थ बताते चलें। • वाचन में कठिन प्रतीत होने वाले शब्दों का शुद्ध उच्चारण और अर्थ बताएँ। • कविता की प्रासंगिकता के बारे में बच्चों को चर्चा करने दें। उनके विचार जानें और अपने भी विचार रखें।
मध्य कौशल— लेखन, वाचन	• माइंड मैप द्वारा कविता की पुनरावृत्ति करवाएँ। • 'पढ़िए' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए शब्दों का उच्चारण करवाएँ। श्रुतलेख भी करवा सकते हैं। बच्चे एक-दूसरे के लिखे गए शब्दों की वर्तनी जाँचें। • 'बताइए' और 'सोचिए' के अंतर्गत दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा करें। बच्चे मौखिक रूप से उत्तर दें। • 'लिखिए' शीर्षक के अंतर्गत प्रश्न 1 और 'व्याकरण संबोध' में दिए प्रश्नों को पुस्तक में ही हल करवाएँ। प्रश्न 2 और 3 पर कक्षा में चर्चा करें और कॉपी में हल लिखवाएँ। • विषय संवर्धन गतिविधियों के अंतर्गत छात्रों के समूह बनवाइए। प्रत्येक समूह अपनी इच्छानुसार गतिविधि का चुनाव करे और कक्षा में प्रस्तुत करे। • 'क्या होता यदि' शीर्षक के अंतर्गत दी गई स्थिति पर सामूहिक चर्चा करवाएँ और मुख्य बिंदुओं को कॉपी में नोट करने को कहें।

Scanned with OKEN Scanner

अभ्यास

पढ़िए

1. **मानक वर्तनी एवं वाचन (उच्चारण)**

दिए गए शब्दों की शुद्ध वर्तनी कक्षा में बोर्ड पर लिखवाएँ या कॉपी में लिखने को कहें। शब्दों का कक्षा में शुद्ध उच्चारण करवाएँ।

2. **बताइए**

क. कवि किसे सावधान कर रहे हैं?

उ. कवि पाठक को/मनुष्य को सावधान कर रहे हैं।

ख. कवि किस बात पर बल दे रहे हैं?

उ. कवि इस बात पर बल दे रहे हैं कि औरों की आलोचना करने से पहले अपनी आलोचना करो। यही तुम्हारे हित में है।

ग. व्यक्ति किसका अभिमान करता है।

उ. व्यक्ति अभिमान करता है कि वह उसे अभिमान/अहंकार नहीं है।

घ. किसको सिद्धि समझा जाता है?

उ. जब मानव मन में अहंकार की उत्पत्ति होने लगती है और वह दूसरों को मूर्ख समझने लगता है तो वह समझ बैठता है कि उसे सिद्धि मिल गई है।

3. **सोचिए (मूल्यपरक प्रश्न)**

✧ हम आजीवन क्या करते रह जाते हैं? सफलता में क्या-क्या चीज़ें बाधक बनती हैं? उन बाधाओं को कैसे दूर किया जा सकता है?

उ. हम आजीवन अहंकार में जीते हैं। सफलता में अहंकार, आलस्य, परनिंदा आदि चीज़ें बाधक बनती हैं। उन्हें निम्नलिखित उपायों से दूर किया जा सकता है—

- अहंकार शून्य जीवन सफलता का मूलमंत्र है।
- सफलता प्राप्त करने के लिए सुनियोजित कार्य करना भी आवश्यक होता है।
- आत्म अनुशासन का पालन करना सफलता की सिद्धि में सहायक होता है।
- सफलता व्यक्तिवादिता में नहीं समग्रता के साथ चलने में है। (अन्य बिंदु भी लिखे जा सकते हैं।)

लिखिए

1. **काव्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए—**

मत समझो ..... अध्ययन करो।

क. कवि के अनुसार जीवन को क्या नहीं समझना चाहिए? i. खेल और खिलौना ✓

ख. कवि ने जीवन की किससे तुलना की है? iii. भोग और भोग्या धरती ✓

ग. कवि ने किससे सावधान रहने की सलाह दी है? ii. काल से ✓

घ. हम धरती को क्या मान बैठते हैं? क्यों?

उ. अनियमित तरीके से धरती का दोहन किया जा रहा है। अत: हम धरती को भोग्या मान बैठे हैं।

ङ: कालकन्या से कवि का इशारा किस ओर है?

उ. कालकन्या से संकेत जगत की मोहमाया की ओर है।

Scanned with OKEN Scanner

2. संक्षेप में उत्तर लिखिए—

क. क्या इस कविता का शीर्षक 'पहले अपना अध्ययन करो' सही है? कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उ. इस कविता का शीर्षक 'पहले अपना अध्ययन करो' पूर्ण रूप से सही और उचित जान पड़ता है। कोई अन्य शीर्षक 'आत्मदर्शन' 'आत्मावलोकन, 'आत्मालोचना' 'खुद को निहार, फिर जा मन के पार' हो सकता है।

ख. 'अपनी आँखों को बंद करने' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ. 'अपनी आँखों को बंद करने' का अर्थ है कि हमें इन आँखों से जग को देखने से पहले खुद को देखना चाहिए अर्थात जग की आलोचना करने से पहले हम खुद की आलोचना करें।

ग. व्यक्ति किसको 'पर्यंक' समझ लेता है? क्यों?

उ. व्यक्ति प्रसिद्धि, प्रशंसा को पर्यंक (आराम करने का स्थल) समझ लेता है। क्योंकि उसे इस बात का अहंकार हो जाता है कि उससे श्रेष्ठ कोई नहीं है।

घ. कवि किनसे सावधान होने की चेतावनी दे रहा है?

उ. कवि अहंकार, प्रशंसा, मोहमाया आदि से सावधान होने की चेतावनी दे रहा है।

3. विस्तार से उत्तर लिखिए—

क. कवि किसको व्यर्थ कह रहा है? क्यों?

उ. कवि अभिमान करने को व्यर्थ कह रहा है क्योंकि अभिमान करने से विनम्रता चली जाती है। विनम्रता के पतन होने से ज्ञान नष्ट हो जाता है।

ख. हम स्वयं को क्या समझ बैठते हैं? कैसे?

उ. हम स्वयं को उपदेशक, सुभाषित शब्दों के जड़ने वाले और गढ़ने वाले समझ बैठे हैं। हम यह मानने लगते हैं कि इस संसार में जो कुछ भी सुंदर है, श्रेष्ठ है इसके जनक हम स्वयं ही हैं। यही हमारा अज्ञान/मूढ़ता है।

ग. जीवन और अपने आपको क्या नहीं समझना है? क्यों?

उ. जीवन को खेल और अपने आप को खिलाड़ी नहीं समझना है क्योंकि हमारा जीवन संसार के प्राणियों में श्रेष्ठ है। इस जीवन के कुछ कर्तव्य हैं जिनको इस संसार में और इसी जीवन में पूरा करना है।

घ. हम अभिमानी क्यों बन जाते हैं?

उ. हम जब स्वयं की ओर न देखकर जग की ओर देखने लगते हैं, अपने दोषों पर परदा डालकर जगत के दोषों का उद्घाटन करने लगते है और यश प्राप्त करने पर स्वयं को ही श्रेष्ठ समझ बैठते हैं, तब हम अभिमानी बन जाते हैं।

ङ: 'पहले अपना अध्ययन करो' कहकर कवि किस अध्ययन की बात कह रहे हैं?

उ. 'पहले अपना अध्ययन करो' कहकर कवि आत्मावलोकन/आत्मालोचना की बात कह रहे हैं क्योंकि यदि मनुष्य को अपने जीवन में सफलता प्राप्त करनी है या अपनी पहचान बनानी है, तो सर्वप्रथम उसे अपना अध्ययन करना होगा। तभी उसमें जग की ओर देखने की क्षमता आ सकेगी।

भाव स्पष्ट कीजिए—

क. उपदेश, सुभाषित शब्दों के घड़िया-जड़िया

उ. इस अंश का भाव यह है कि हमारे पास अन्य व्यक्तियों के लिए बहुत उपदेश और सुझाव होते हैं परंतु स्वयं के लिए नहीं। जबकि आवश्यकता स्वयं के लिए ही है। शब्दों को हम औरों के लिए तो गढ़ते हैं, जड़ते हैं लेकिन अपने लिए उन्हें नहीं अपनाते हैं। यही हमारे जीवन की बड़ी भूल है। जो सलाह दूसरों को दी जा रही है उसका पालन हमें खुद भी करना चाहिए।

ख. यों खिला-पिलाकर कालकन्या क्या कहती है

उ. इस अंश का भाव यह है कि संसार की यह मोह-माया हमें जीवनभर भ्रमित किए रहती है। समय तेज़ी के साथ बीत जाता है और हम खाली हाथ रह जाते हैं। हमें इस कालकन्या से सावधान रहना है।

Scanned with OKEN Scanner

ग. तुम शयन करो इस पर, आप का दहन करो

उ. इस अंश का भाव यह है कि हम भूल जाते हैं कि यश प्राप्त करना फूलों की सेज नहीं है। यह अंगारों की सेज है। इस सेज पर हमें अपने स्वाभाविक अहंकार का दहन करना होगा। तभी हम सच्चे अर्थों में यश के पात्र बन सकेंगे।

समझिए व्याकरण संबोध

1. **निम्नलिखित शब्दों को पहचानकर लिखिए कि वे स्त्रीलिंग हैं या पुल्लिग—**

अभिनेता	—	···पुल्लिग···	अंगारा	—	···पुल्लिग···
मंच	—	···पुल्लिग···	उपदेश	—	···पुल्लिग···
आँखें	—	···स्त्रीलिंग···	मूर्खराज	—	···पुल्लिग···
साधक	—	···पुल्लिग···	ज्वाला	—	···स्त्रीलिंग···
कालकन्या	—	···स्त्रीलिंग···	खिलाड़ी	—	···पुल्लिग···

2. **निम्नलिखित वाक्यों को बहुवचन में बदलिए—**

क.	जीने वाला जीते जी थक गया।	···जीने वाले जीते जी थक गए।···
ख.	मुझे सावधान होकर अपना अध्ययन करना चाहिए।	···हमें सावधान होकर अपना अध्ययन करना चाहिए।···
ग.	वह जीवन को एक खिलौना समझता है।	···वे जीवन को एक खिलौना समझते हैं।···
घ.	मैं जीवन भर दूसरों को उपदेश देता रहा।	···हम जीवन भर दूसरों को उपदेश देते रहे।···
ङ	मुझे जीवन को भोग और धरती को भोग्या नहीं समझना चाहिए।	···हमें जीवन को भोग और धरती को भोग्या नहीं··· ···समझना चाहिए।···

3. **निम्नलिखित रेखांकित पदों के कारक-भेद पहचानकर लिखिए—**

क.	तुमने उसे <u>जीवन का</u> नेता समझ लिया है।	···संबंध कारक···
ख.	इस <u>संसार के लिए</u> तुमने क्या किया है?	···संप्रदान कारक···
ग.	<u>फूलों की</u> सेज पर शयन करो।	···संबंध कारक···
घ.	तुम <u>जगत को</u> मूर्ख मत समझो।	···कर्म कारक···
ङ	<u>हे मानव</u>! सावधान हो जा।	···संबोधन कारक···
च.	यह काल तुम्हें <u>संसार से</u> दूर ले जा रहा है।	···अपादान कारक···

कीजिए विषय संवर्धन गतिविधियाँ (Subject Enrichment Activities)

1. संबंधित लिंक की मदद से छात्र कविताओं का संकलन करें और चार्ट बनाकर कक्षा में लगाएँ।
2. असफलता में ही सफलता छिपी है यह बताते हुए छोटे भाई को पत्र लिखें।
3. कबीर के दोहे का भाव बताएँ और कविता के मूल भाव से साम्यता करवाएँ।

क्या होता यदि— हम (व्यक्ति) दूसरों के मन की बात जान पाते तो सामने वाला क्या करने वाला है यह हम पहले ही जान जाते और उसके अनुसार प्रतिक्रिया करने के लिए तैयार रहते। ऐसी स्थिति में हम संकट काल से निपटने के लिए हमेशा तैयार रहते लेकिन हाँ, यदि सारी बातें पहले से ही पता रहतीं तो हम सुखद आश्चर्यों से वंचित रह जाते। जीवन में कोई रोमांच न होता।

Scanned with OKEN Scanner

7 आम और गालिब

पाठ-योजना

पाठ का नाम	आम और गालिब
कालांश संख्या	4 से 8
शिक्षण प्रक्रिया	Student Led
पाठ का उद्देश्य	• महान उर्दू शायर मिर्ज़ा गालिब के आमों के शौक के बारे में बताना • आमों की विभिन्न किस्मों के बारे में बताना • पाठ का शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन सिखाना • कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण और अर्थ बताना • क्रिया के भेद, अव्यय के भेद और 'न', 'नहीं', मत के प्रयोग का परिचय देकर अभ्यास करवाना • विभिन्न गतिविधियों द्वारा सृजनात्मक क्षमता का विकास करना
पाठ में आने वाले विषय	उर्दू शब्दों के हिंदी रूप, तत्सम-तद्भव शब्द, क्रिया के भेद, अव्यय के भेद—संबंधबोधक शब्द, 'न', 'नहीं', मत का प्रयोग, चार्ट निर्माण, सूची निर्माण, घटना लेखन
शिक्षण सामग्री	पाठ्यपुस्तक, आई-बुक एनिमेशन, वेब सपोर्ट, टेस्ट जेनरेटर
मानक/अमानक शब्द	संबंध/सम्बन्ध, कच्चा/कच्चा, रज़ीउद्दीन/रज़ीउद्दीन, फाह्यान/फ़ाह्यान
आरंभ— चर्चा एवं समूह वाचन, कौशल— पठन, वाचन-श्रवण	• पाठ के शीर्षक और चित्र पर चर्चा करवाएँ—शीर्षक से पाठ की विषय वस्तु के बारे में क्या पता चलता है? चित्र में क्या दिखाया गया है? मिर्ज़ा गालिब कौन थे? आपने कौन-कौन से आम खाए हैं? आम के पौष्टिक गुणों के बारे में बताएँ। आदि। • पाठ का सार बताएँ। • Smart board पर पाठ का एनिमेशन दिखाएँ और वाचन सुनवाएँ। • कक्षा को समूह में विभाजित करके पाठ का शुद्ध वाचन करवाएँ। • एकाग्रता को बनाए रखने के लिए बीच-बीच में दूसरे समूहों से प्रश्न पूछते रहें। • वाचन में कठिन प्रतीत होने वाले शब्दों का शुद्ध उच्चारण और अर्थ बताएँ। • पाठ की प्रासंगिकता के बारे में बच्चों को चर्चा करने दें। उनके विचार जानें और अपने भी विचार रखें।
मध्य कौशल— लेखन, वाचन	• माइंड मैप द्वारा पाठ की पुनरावृत्ति करवाएँ। • 'पढ़िए' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए शब्दों का उच्चारण करवाएँ। श्रुतलेख भी करवा सकते हैं। बच्चे एक-दूसरे के लिखे गए शब्दों की वर्तनी जाँचें। • 'बताइए' और 'सोचिए' के अंतर्गत दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा करें। बच्चे मौखिक रूप से उत्तर दें। • 'लिखिए' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए प्रश्न संख्या 1 और 'व्याकरण संबोध' के प्रश्नों का हल छात्र पुस्तक में ही लिखें और एक-दूसरे के उत्तरों का मूल्यांकन करें।

Scanned with OKEN Scanner

	• प्रश्न संख्या 2 और 3 के उत्तरों पर छात्र कक्षा में चर्चा करें और उत्तर कॉपी में लिखें। शिक्षक चर्चा द्वारा सही उत्तर पर पहुँचने में सहायता करें। • विषय संवर्धन गतिविधियों के अंतर्गत छात्रों के समूह बनवाएँ। प्रत्येक समूह अपनी इच्छानुसार गतिविधि का चुनाव करे और कक्षा में प्रस्तुत करे। • 'क्या होता यदि' शीर्षक के अंतर्गत दी गई स्थिति पर सामूहिक चर्चा करवाएँ और मुख्य बिंदुओं को कॉपी में नोट करवाएँ।
अंत कौशल— लेखन, वाचन	Websupport से Worksheet के प्रिंट लेकर बच्चों को वितरित करें और गृहकार्य के रूप में करके लाने को कहें। कक्षा के सभी बच्चे एक-दूसरे की Worksheet की जाँच करें अथवा शिक्षक सही उत्तर कक्षा में बुलवाएँ और छात्रों को स्वमूल्यांकन करने दें।
शिक्षण संप्राप्तियाँ	• छात्र मिर्ज़ा गालिब के आम प्रेमी रूप को जान जाएँगे। • आमों की विभिन्न किस्मों के नाम बता सकेंगे। • पाठ का शुद्ध वाचन कर सकेंगे। • कठिन शब्दों के अर्थ बता सकेंगे। • व्याकरणिक बिंदुओं का अभ्यास होगा। • विभिन्न गतिविधियों द्वारा सभी कौशलों और सृजनात्मक क्षमता का विकास होगा।

पाठ का सार

उर्दू के मशहूर शायर गालिब आम के बड़े शौकीन थे। उन्होंने आम पर न सिर्फ़ शायरी की अपितु अपने मित्रों को भिन्न प्रकार के आमों का उल्लेख करते हुए 63 चिट्ठियाँ भी लिखीं। प्रत्येक वर्ष आमों के मौसम में उनकी गली क़ासिम जान पुरानी दिल्लीवाली हवेली में बड़ा ज़ोरदार मुशायरा भी हुआ करता था। इस रसीले फल की प्रशंसा फ़ाह्यान और ह्वेनसांग जैसे विदेशी इतिहासकारों ने भी की है। आम के ऊपर प्रसिद्ध कवियों ने बहुत कुछ लिखा है। हज़रत अमीर खुसरो ने तो आम को 'फ़ख़्र-ए-गुलशन' कहा है। अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में गालिब द्वारा अपने घनिष्ठ मित्र चौधरी अब्दुल गफूर को लिखे पत्र से पता चलता है कि हाज़मा खराब होने के कारण वे दिन में मात्र दस-बारह आम खा पाते थे। आम के शौकीन गालिब माँगकर आम खाने में भी गुरेज़ न करते थे। आज भी हर साल आमों के मौसम में दिल्ली की 'गालिब अकादमी' द्वारा गालिब की याद में बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन में स्थित उनकी मज़ार पर 'आमों की दावत' का आयोजन किया जाता है।

अभ्यास

पढ़िए

1. **मानक वर्तनी एवं वाचन (उच्चारण)**

   दिए गए शब्दों की शुद्ध वर्तनी कक्षा में बोर्ड पर लिखवाएँ या कॉपी में लिखने को कहें। शब्दों का कक्षा में शुद्ध उच्चारण करवाएँ।

2. **बताइए**

   क. कैसे पता चलता है कि मिर्ज़ा गालिब को आम बहुत पसंद थे?

   उ. मिर्ज़ा गालिब आमों के बहुत शौकीन थे, इसका पता चलता है उन 63 चिट्ठियों से जो गालिब ने अपने मित्रों को भिन्न प्रकार के आमों का उल्लेख करते हुए लिखी थीं। आम पर उन्होंने शायरी भी की है। गालिब के आमों के चाव के बारे में कहा जाता है कि वे एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने विभिन्न प्रकार की जातियों के सर्वाधिक आम खाए थे।

Scanned with OKEN Scanner

ख. भारत में आम की कितनी प्रजातियाँ पाई जाती हैं? कुछ प्रजातियों के नाम बताइए।

उ. भारत में आमों की चार हज़ार प्रजातियाँ पाई जाती हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार से हैं— मालदा, फ़ज़ली, चौसा, ज़र्द, आलू, जहाँगी, रहमत-ए-खास, दसहरी, सरौली, सफ़ेदा, तोतापरी, सिंदूरी, लँगड़ा, अल्फ़ांसो आदि।

ग. हज़रत अमीर खुसरो ने आम को क्या नाम दिया?

उ. हज़रत अमीर खुसरो ने आम को 'फ़ख़-ए-गुलशन' कहा है।

घ. गालिब की याद में आमों की दावत कहाँ की जाती है?

उ. आमों के मौसम में गालिब की याद में दिल्ली की 'गालिब अकादमी' द्वारा बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन में स्थित उनकी मज़ार पर 'आमों की दावत' का आयोजन किया जाता है।

3. सोचिए (मूल्यपरक प्रश्न)

✧ संतुलित भोजन की थाली में फलों का क्या स्थान है? आपको कौन-सा फल पसंद है? क्यों?

उ. संतुलित भोजन हमारे शरीर का पोषण करता है और शरीर के लिए आवश्यक वसा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन आदि तत्व प्रदान करता है। परंतु संतुलित भोजन की थाली फलों के बिना अधूरी है। फल भोजन में विटामिन्स और कैल्शियम की कमी को पूरा करते हैं। फल खाने से वज़न नियंत्रण में रहता है। फल हर तरह की बीमारियों से हमारी रक्षा करते हैं। जितनी अधिक मात्रा में विटामिन्स, मिनरल्स और एंटीऑक्सीडेंट और पोषक तत्व फलों में पाए जाते हैं उतने किसी अन्य खाद्य पदार्थ में नहीं मिलते। मुझे सेब बहुत पसंद है क्योंकि इसके सेवन से हम स्वस्थ रहते हैं। कहा जाता है कि एक सेब प्रतिदिन खाने से कभी डॉक्टर के पास जाने की नौबत नहीं आती। (छात्र किन्हीं दूसरे फलों के विषय में भी लिख सकते हैं।)

लिखिए

1. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

पड़ोस में ही.....आम नहीं खाते।

क. हकीम रजीउद्दीन खाँ को कौन-सी चीज़ पसंद नहीं थी? iii. आम ✓

ख. गालिब ने आम के छिलके कहाँ डाले थे? iv. कूड़ेदान में ✓

ग. गालिब ने हकीम साहब को क्या उत्तर दिया? i. "गधे आम नहीं खाते" ✓

घ. 'एक आँख न भाना' का क्या आशय है?

उ. इसका आशय यह कि हकीम रज़ीउद्दीन खाँ को आम बिलकुल अच्छे नहीं लगते थे।

ङ. मिर्ज़ा साहब ने जवाब में क्या चुटकी ली? इसमें क्या इशारा छिपा है?

उ. मिर्ज़ा साहब ने चुटकी लेते हुए कहा, "बेशक! गधे आम नहीं खाते!" इसमें इशारा छिपा हुआ है कि आदमी ही आम खाते हैं।

2. संक्षेप में उत्तर लिखिए—

क. फलों के शहंशाह आम की विशेषता क्या है?

उ. इसकी विशेषता यह है कि न केवल अन्य फलों के मुकाबले इसे काटकर खाने में अधिक मज़ा आता है बल्कि इसे कच्चा खाने या चूसकर खाने का मज़ा/आनंद भी कुछ और ही है।

ख. गालिब को आम कौन-कौन भेजते थे?

उ. गालिब को रामपुर के नवाब 'लंगड़ा' आम भेजते थे। बरेली से भी एक दोस्त 'सरौली' आमों की टोकरी भेजते थे। एक बार बहादुरशाह ज़फ़र ने भी महताब बाग के आमों का टोकरा भिजवाया था। उनके बेटे मिर्ज़ा फ़खरू भी उन्हें आम भेजते थे।

ग. आम के बारे में गालिब के अतिरिक्त और किन-किन लोगों ने लिखा है?

उ. आम के बारे में नज़ीर अकबराबादी और इकबाल ने भी बहुत कुछ लिखा है।

Scanned with OKEN Scanner

3. **विस्तार से उत्तर लिखिए—**

क. 'उर्दू-ए-मुअल्ला' में प्रकाशित आम से संबंधित पत्र का वर्णन कीजिए।

उ. गालिब द्वारा रचित पुस्तक 'उर्दु-ए-मुअल्ला' में गालिब का एक पत्र आमों के संबंध में प्रकाशित हुआ है, जिसमें उन्होंने लिखा है— 'आम मुझको बहुत पसंद हैं। रामपुर से नवाब ने 'लंगड़ा' आमों की पेटी भेजी है। हाँ, बरेली से भी एक दोस्त ने रसीले 'सरौली' आमों की एक टोकरी भेजी है बल्कि दो टोकरियाँ हैं। हर टोकरी में सौ आम हैं। कल्लू दारोगा ने मेरे सामने वे टोकरियाँ खोलीं। दो सौ में से 83 आम निकले। बाकी सड़ गए थे।

ख. बहादुरशाह ज़फ़र और मिर्ज़ा गालिब की महताब बाग की सैर का किस्सा अपने शब्दों में लिखिए।

उ. बादशाह बहादुरशाह जफ़र और उनके दरबारियों की टोली आमों के मौसम में महताब बाग में टहल रही थी। इस समूह में मिर्ज़ा गालिब भी शामिल थे। महताब बाग के रसीले आम खास तौर पर बादशाह की बेगम के लिए रखे गए थे और अन्य किसी को उनका लुत्फ उठाने की इजाज़त नहीं थी। मिर्ज़ा गालिब की नज़र बार-बार उन आमों की ओर जा रही थी। बहादुरशाह जफ़र ने गालिब की ओर देखा और उनकी मनोदशा जानते हुए पूछा कि तुम इतने ध्यान से क्या देख रहे हो? गालिब ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, ''हुजूर! आम आम पर खाने वाले का नाम लिखा होता है। मैं यह जानने की कोशिश कर रहा हूँ कि किस-किस आम पर मेरा नाम लिखा है।'' गालिब की वाकपटुता ने बादशाह को हंसा दिया और उन्होंने मिर्ज़ा की हाज़िरजवाबी की प्रशंसा की। खुश होकर, अगले ही दिन बादशाह ने महताब बाग के आमों के दो टोकरे मिर्ज़ा गालिब के पास भिजवा दिए।

ग. गालिब आम माँगकर खाने में भी गुरेज़ न करते थे—इससे उनके व्यक्तित्व का कौन-सा पहलू सामने आता है?

उ. मिर्ज़ा गालिब का व्यक्तित्व बहुत ही सरल और सहज था। उनमें अहंकार नाममात्र के लिए भी नहीं था। उनका स्वभाव भी आमों की तरह सरस था। नीरसता, कटुता उनको छू भी नहीं पाई थी। जैसे फलों का राजा आम होता है ठीक वैसे ही रसिकों, विद्वानों, कद्रदानों के राजा मिर्ज़ा गालिब थे।

घ. नानौता में गालिब किस तरह आम की दावत उड़ाते थे?

उ. शेख मोहसिनुद्दीन हर वर्ष मिर्ज़ा साहब को नानौता (सहारनपुर) बुलाते थे और वे बाग में बैठकर घंटों मीठे आम खाते थे। शेख साहब वहीं बरमे के पास चारपाई बिछा देते। बालटियों में रसीले ठंडे आम पड़े रहते। वे घंटों उन्हें चूसते रहते थे।

समझिए व्याकरण संबोध

1. **हिंदी रूप लिखिए—**

शायरी	—	···कविता···	बेगम	—	···श्रीमती/पत्नी···	लुत्फ़	—	···आनंद···
वली-ए-अहद	—	···बेटा/पुत्र···	मुशायरा	—	···कवि सम्मेलन···	शागिर्द	—	···शिष्य···

2. **निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए—**

आम्र	—	···आम···	गृह	—	···घर···	क्रोध	—	···गुस्सा···
मित्र	—	···सखा···	अक्षि	—	···आँख···	कार्य	—	···काम···
पत्र	—	···पत्ता/चिट्ठी···	कूप	—	···कुआँ···	गर्दभ	—	···गदहा (गधा)···
क्षण	—	···पल···	युग	—	···जुग···	जिह्वा	—	···जीभ···

3. **निम्नलिखित वाक्यों के वचन बदलकर वाक्य पुनः लिखिए—**

क.	मैं आपके साथ बाग में घूमना चाहता हूँ।	···हम आपके साथ बागों में घूमना चाहते हैं।···
ख.	मेरे विद्यालय में गालिब की शायरी का अच्छा संकलन है।	···हमारे विद्यालय में गालिब की शायरी का अच्छा संकलन है।···
ग.	हमने आज बहुत आम खाए।	···मैंने आज बहुत आम खाए।···
घ.	कविता मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है।	···कविताएँ हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही हैं।···
ङ	आज संग्रहालय देखने एक यात्री आया है।	···आज संग्रहालय देखने अनेक यात्री आए हैं।···

Scanned with OKEN Scanner